सामाजिक नियंत्रण में जनमत और प्रचार की भूमिका

आधुनिक समाजों में जनमत-प्रचार सामाजिक नियंत्रण के प्रमुख एवं प्रभावशाली साधन है। क्या अर्थ है जनमत एवं प्रचार का? जनमत एक सामूहिक निर्णय है जो विभिन्न प्रकार के विचारों के पश्चात् एक सामान्य निर्णय के रूप में हमारे सामने आता है। जॉन डेवी "The Public and its Problems" ने जनमत को परिभाषित करते हुए कहा है कि 'जनमत एक निर्णय है जो जनता का निर्माण करने वाले व्यक्तियों द्वारा बनाया तथा स्वीकार किया जाता है तथा जिसका संबंध सार्वजनिक विषयों से होता है।" जनमत के निर्माण में प्रचार की महत्वपूर्ण भूमिका है। प्रचार अपने आप जन्म नहीं लेता बल्कि इस कृत्रिम साधन द्वारा किसी विशेष विचार एवं वस्तु को जानबूझकर आगे बढ़ाया जाता है। एक तरह से प्रचार के द्वारा व्यवहारों को निर्धारित करने का अप्रत्यक्ष निर्देश दिया जाता है। डूब (Doob) ने प्रचार को परिभाषित करते हुए लिखा है कि 'प्रचार संकेत के माध्यम से किसी व्यक्ति अथवा अनेक व्यक्तियों द्वारा किया जाने वाला व्यवस्थित प्रयत्न है जिसका उद्देश्य व्यक्तियों की मनोवृत्तियों पर नियंत्रण रखना और इस प्रकार उनकी क्रियाओं पर नियंत्रण बनाए रखना होता है।' वास्तव में प्रचार एक मनोवैज्ञानिक विधि है जिसका कार्य नियोजित ढंग से जनमत का निर्माण करना होता है।

समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ, टेलीविजन रेडियो, राजनीतिक दल, शिक्षण संस्थाएँ, नेतृत्व धार्मिक एवं सांस्कृतिक संस्थाएँ आदि जनमत

एक प्रकार के साधन हैं। इन साधनों के द्वारा ही इच्छित वस्तु-विचार का प्रचार करके जनमत निर्माण करते हैं। ध्यान है तो बिना प्रचार के जनमत का निर्माण नहीं हो सकता। इसलिए सामाजिक नियंत्रण के दोनों का ही समान महत्व माना जाता है।

प्राथमिक समूह में नियंत्रण के औपचारिक साधन के स्थान पर अनौपचारिक साधनों का ज्यादा वर्चस्व होता है। प्राथमिक समूहों में "सार्वजनिक निंदा" का इतना महत्व है कि इसका उल्लंघन साधारण इंसान "सार्वजनिक उपहास" के भय से नहीं करता। इन समाजों में व्यक्ति से ज्यादा महत्व परिवार का होता है।

इसी तरह आधुनिक समाजों में, जहाँ अपने विभिन्न स्वार्थों की पूर्ति हेतु लोग संगठित होते हैं, वहाँ पर वे जनमत की अवहेलना नहीं कर पाते। ऐसा करने पर उनके स्वार्थों की पूर्ति में बाधा पड़ती है। इन समाजों की विशेषता "श्रम विभाजन - विशेषीकरण" इसके सदस्यों को परस्पर निर्भर बनाती है।

समाज में वांछित नियोजित परिवर्तन भी प्रचार एवं जनमत से ही सम्भव है। इन दोनों के माध्यम से ही राज्य या समाज जनमानस की मनोवृत्तियों में आवश्यक परिवर्तन लाता है।